

च

संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का बाईसवाँ अक्षर और छठा व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु और स्पर्श वर्ण है, यह श्वास, विवार, घोष और अल्पप्राण है।

चंक वि. (तद्.) पूरा-पूरा, समूचा, सारा, समस्त पुं. एक उत्सव जो उत्तर भारत तथा मध्य प्रदेश आदि में फसल कटने पर मनाया जाता है।

चंक्रम पुं. (तत्.) टहलने का स्थान।

चंक्रमण पुं. (तत्.) 1. धीरे-धीरे इधर से उधर घूमना, टहलना 2. बार-बार घूमना 3. उछलना, कूदना, फाँदना 4. मंद गति से टेढ़े-मेढ़े आना-जाना।

चंक्रमित वि. (तत्.) बार-बार घूमा हुआ या चक्कर खाया हुआ।

चंग स्त्री. (फा.) 1. डफली के आकार का एक छोटा वाद्य यंत्र जिसे लावनी लोकगीत के गायन के साथ नृत्योत्सव आदि के दौरान बजाया जाता है। 2. सितार का चढ़ा हुआ पंचम सुर 3. पतंग 4. कलंक **वि.** (तत्.) 1. दक्ष, चतुर, कुशल 2. स्वभाव 3. सुंदर, शोभाशाली, शोभायुक्त, रम्य 4. अच्छा, उत्तम।

चंगला स्त्री. (तत्.) मेघराग से संबंधित एक रागिनी।

चंगा स्त्री. (तद्.) 1. कुशल, चतुर 2. स्वस्थ 3. सुंदर, शोभायुक्त 4. अच्छा, उत्तम।

चंगुल पुं. (फा. चंगाल) चिड़ियों अथवा पशुओं का मुड़ा हुआ पंजा जिससे वे कोई वस्तु या शिकार को पकड़ते हैं मुहा.- चुंगल में फँसना- काबू में आना या होना।

चंच पुं. (तत्.) 1. पाँच अंगुल की एक नाप 2. डलिया।

चंचत्क वि. (तत्.) 1. उछलने वाला, कूदने वाला 2. गमनशील, चलने वाला 3. काँपने वाला, हिलने वाला।

चंचनाना अ.क्रि. (अनु.) 1. लड़ना, झगड़ना 2. बुड़बुड़ाना 3. आवेश में आना 4. ज्यादा आँच से दरार पड़ जाना 5. फली का चटक कर बिखरना।

चंचरी स्त्री. (तत्.) 1. भमरी, भंवरी, भौंरी 2. चाचरि, चांचरि, होली के अवसर पर गाया जाने वाला गीत 3. हरिप्रिया छंद।

चंचरी स्त्री. (देश.) 1. एक चिड़िया जो जमीन पर घास के नीचे घोंसला बनाती है 2. अनाज के वे दाने जो पीटने पर भी बाली में लगे रह जाते हैं।

चंचरीक पुं. (तत्.) भमर, भौंरा।

चंचरीकावली स्त्री. (तत्.) [चंचरीक+आवली] 1. भौंरों की पंक्ति 2. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंचल वि. (तत्.) 1. चलायमान, अस्थिर 2. अधीर 3. अव्यवस्थित 4. अस्थितप्रज्ञ 5. नटखट, चुलबुला, मनमौजी।

चंचलता स्त्री. (तत्.) 1. चपलता 2. शरारत 3. अस्थिरता 4. स्वेच्छाचारिता।

चंचला स्त्री. (तत्.) 1. लक्ष्मी 2. बिजली 3. पिप्पली 4. एक वर्णवृत्त **वि.** अस्थिर, चलायमान।

चंचलाई स्त्री. (तद्.) 1. चंचलता 2. चपलता 3. अस्थिरता।

चंचा पुं. (तत्.) घास-फूस अथवा बेंत आदि का पुतला जिसे खेतों में पक्षियों आदि को डराने के लिए गाड़ा जाता है 2. तुच्छ व्यक्ति **स्त्री.** बेंत आदि की टोकरी।

चंचु वि. (तत्.) 1. प्रसिद्ध, विख्यात, विदित, यशस्वी 2. चतुर, प्रवीण (इस शब्द का प्रयोग समासांत में होता है जैसे अक्षरचंचु, शास्त्रचंचु आदि) पुं. 1. पक्षी 2. बरसात में उगने वाला एक साग (चेंच का साग.) **स्त्री.** चोंच।

चंचुमान पुं. (तत्.) 1. पक्षी 2. चोंचवाला।